Date: 23.09.2020

Subject:- Maithili

TOPIC:- महाकवि गोविन्ददास भजनावली

class:- B.A. Part I (Hons)

BY:- Dr. Sanjay Kumar Paswan, Assistant Professor, D.B. college Jainagar L.N.M.U. Darbhanga.

17म शताब्दीक मध्य विद्यापति परम्पराक मध्यकालीन कवि गोविन्ददास मैथिली काव्य साहित्यक एकटा महान उपलब्धि थिकाह। गोविन्ददास कविसँ पैघ कलाकार तथा अद्वितीय शिल्पी छलाह। ओ मध्यकालीन मैथिलीक महान शृंगारिक कवि छलाह। गोविन्ददास कविक कवि तथा हिनक काव्य नारिकेल समान मानल गेल अछि।

विद्यापति ओ लोचनैं जकाँ गोविन्ददास सेहो बहुत दिन धरि बंगालक बंगाली कवि मानल जाइत रहलाह, जकर कारण भेल बंगालक विभिन्न वैष्णव पदावली सभमे हिनक पदक प्राप्ति। विद्यापतिये जकाँ गोविन्ददासोक बहुत रास पद बंगाल पहुँचल। स्वभावतः प्रसिद्ध रचनाकार नामे रचना करबाक जे भारतीय वाङ्मयक परम्परा रहल अछि, तकरहु सम्भव अछि जे गोविन्ददासक नामे हुनके बंगालमे पद रचना भेल हो आदि कारणें हिनक भक्तिविषयक विवाद रहलैं

बनले अछि। एहि समक कारणे हिनक कालस्थितिक सम्बन्धमे सेहो अनेक विवाद समक्ष आयल जकर चर्च अनावश्यक अछि। आब एहि सब विवादक अंत भऽ गेल अछि।

गोविन्ददास मिथिलाक मैथिल कवि छलाह तथा ई महाराज सुन्दर ठाकुरक समकालीन (1663-1670) छलाह। ई म० म० शुचिकर झाक प्रपौत्र तथा कृष्णदास झाक पुत्र छलाह। ई वंश पंडित ओ कविक वंश छल तथा हिनक वंशज लोकनि सेहो रचनाकार छलाह जाहिमे रामदास केर आनन्द विजय नाटिका भेटैत अछि। यद्यपि गोविन्ददासक जन्मतिथि तकबाक प्रयास नहि भेल अछि, तथापि हिनक भाषाक आधार पर हिनक समय 17म शताब्दीक मध्य मानल जायत। ई नलचरित नाटिकाक रचनाकार गोविन्द तथा भैरव सिंहक नामोल्लेख करबला गीतकार गोविन्दसँ सर्वथा भिन्न मानल जाइत छथि।

गोविन्ददासक पदक संकलन केर अनेक संस्करण भेटैत अछि जाहिमे प्रथम थिक मथुरा प्रसाद दीक्षितक 'गोविन्द गीतावली' तथा दोसर थिक कवीश्वर चन्दा द्वारा संकलित ओ डॉ. अमरनाथ झा द्वारा सम्पादित 'शृंगारभजनावली' जकरा अपेक्षाकृत प्रामाणिक मानल गेल। तत्पश्चात् प्रो. सुरेन्द्र झा सुमन द्वारा सम्पादित 'गोविन्द-गीतांजलि' तथा पं. गोविन्ददासकेँ झा

द्वारा सम्पादित 'गोविन्ददास भजनावली' प्रकाश मे आयल। कवीश्वर चन्दा, अनुश्रुतिक आधार पर कृष्णलीला नामक एक काव्यग्रंथक रचनाकार गोविन्ददासकें मानने छथि, जाहिमे कथाक एकटा सूक्ष्म तारतम्य सेहो अछि। मैह जाहिमे गोपीलोकनिक संग विहारक विस्तृत श्रृंगारिक वर्णन अछि। यैह प्रवृत्ति जयदेवक गीतगोविन्दक सेहो छिक भाडि कारणे गीत काव्य होइतहुँ गीत-गोविन्दकें महाकाव्य मानल गेल अछि आ एहि प्रकारें ओ एही कारणे गो-विन्ददासोकें महाकवि मानल जाइत अछि आ तें मैथिलीमे जँ केओ अभिनव जय-देव होताह तँ ओ विद्यापति नहि, अपितु गोविन्ददासे होताह। विद्यापतिक जे काव्य व्यक्तित्व व्यापकता ओ विभिन्न आयाम अछि तथा जे भाषा ओ रचना वैविध्य अछि से जयदेवक नहि अछि। किन्तु जयदेव ओ गोविन्द-दासक काव्य व्यक्तित्व, शिल्प चमत्कार भावबोध, श्रृंगारिकता, गीतकाव्यमे कथाशिल्पक तारतम्य आदिक आधार पर दुनू अत-याधिक साम्य अछि। तँ अभिनव जय-देव गोविन्ददासे होताह।

काव्यके मूल स्वरूप आधार पर गोविन्ददास मैथिली जगतमे सर्वाधिक के विवादास्पद कवि रहलाह अछि। दीक्षित ओ सुमन जी अपन-अपन संस्करणक नाम गीतावली ओ गीतांजलि रखलनि किन्तु डॉ अमरनाथ झा कें मूल स्वरूप प्रसंगमे द्वन्द्व छलनि तँ श्रृंगारभजनावली नामकरण कैलनि।

continue